विषय- संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र   डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी- शुकनासोपदेश   महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या   दिनांक- 07/09/2020

दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वमुन्मत्ती करोति। सरस्वतीपरिगृहीत-मीर्ष्ययेव नालिङ्गति जनम्। गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति।

अर्थ- (दुष्टपिशाचीव दर्शितानेकपुरुषोच्छ्राया स्वल्पसत्त्वम् उन्मत्तीकरोति) अनेक पुरुषों की ऊँचाई प्रकट कर कम साहस वाले (व्यक्ति को) उन्मत्त कर देने वाली दुष्ट

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____ Page No.: _____

पिशाचिनी की तरह (यह लक्ष्मी) अनेक पुरुषों की उन्नति (समृद्धि) दिखलाकर अल्प बुद्धि वाले (व्यक्ति) को उन्मत्त बना देती है। (सरस्वतीपरिगृहीतमी- र्ष्ययेव नालिङ्गति जनम्) सरस्वती द्वारा ग्रहण किये गये व्यक्ति को मानो ईर्ष्या से आलिङ्गन नहीं करती। गुणी को मानो अपवित्र (मानकर) स्पर्श नहीं करती। (गुणवन्तमपवित्रमिव न स्पृशति)

टिप्पणी- लक्ष्मी के पक्ष में 'अनेकपुरुषोच्छ्राय' का अर्थ है- 'अनेक व्यक्तियों की उन्नति'। पिशाची के पक्ष में इसका एक भाव तो यह हो सकता है कि एक दूसरे के ऊपर खड़े हुए अनेक पुरुषों के बराबर ऊँचाई तथा पुरुष शब्द का दूसरा अर्थ पारिभाषिक है- पाँच अरत्नी या 120 अंगुल जितनी ऊँचाई। यह सम्भवतः एक औसत आदमी की ऊँचाई मानी गई है, जो कि लगभग 6 फुट के बराबर है। जिस प्रकार दूसरों को भयभीत करने की नीयत से दुष्टा बनी पिशाचिनी अनेक पुरुषों के बराबर ऊँचाई को दिखलाकर कायर व्यक्तियों को भय से पागल बना देती है उसी प्रकार लक्ष्मी भी अनेक व्यक्तियों के अभ्युदय को दिखा कर अल्पबुद्धि व्यक्तियों को उन्मत्त कर देती है अर्थात् अल्पबुद्धि जन उसकी आशा में उन्मत्त सदृश हो जाते हैं।

सरस्वती और लक्ष्मी का सपत्नीभाव कवियों में प्रसिद्ध है। जैसे कोई नारी अपनी सौत के आलिंगनपाश में बंधे पति को ईर्ष्या- वश आलिंगन नहीं करती उसी प्रकार लक्ष्मी

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____ Page No.: _____

भी सरस्वती द्वारा वरण किये गये व्यक्ति को मानो ईर्ष्या से आलिंगन नहीं करती। प्रायः विद्वान् निर्धन ही देखे जाते हैं। गुण = (ईर्ष्या) के उत्प्रेक्षा करने से 'गुणोत्प्रेक्षा' तथा 'नालिंगति' क्रिया द्वारा लक्ष्मी में सौत के व्यवहार को आरोपित करने से 'समासोक्ति' अलंकार भी है।

पदव्याख्या - दर्शितानेकपुरुषोच्चाया = अनेके पुरुषाः अनेकपुरुषाः (क०धा०) अनेकपुरुषाणाम् उच्चायः अनेकपुरुषोच्चायः (ष० तत्पु०) दर्शितः अनेकपुरुषाणाम् उच्चायः यया सा (बहु०)। स्वल्पसत्त्वम् = अनुन्मत्तम् उन्मत्तं करोति, उन्मत्त + च्वि कृ + लट् प्र०पु० ए०। सरस्वतीपरिगृहीतम् = सरस्वत्या परिगृहीतम् परि + ग्रह् + क्त, द्वि० ए०। (तृ० तत्पु०) गुणवन्तम् = गुण + वतुप्, वि० (पुं०) द्वि० ए०।

Scanned with CamScanner